एक चिट्ठी जीवन के नाम

ज्योति*

तुम चले गए। जाकर लौटना अच्छा होता है लेकिन जाकर न लौटना बहुत खराब लगता है। तुम्हारे जाने के बाद मेरे अंदर कुछ घाव बन रहे हैं। मुझे अंदर ही अंदर दर्द होने का एहसास होता है। मैं परेशान हूँ। लेकिन नहीं जान पा रही कि इससे निजात कैसे मिले? क्या मुझे इन घावों के कारण का पता लगाना चाहिए या मैं पहले से इनके कारणों को जानती हूँ? मैं अनजान कैसे बन सकती हूँ? अगर लापरवाही की, तो बात बिगड़ जाएगी। मेरी जिंदगी को खुश रहने का हक है। इन घावों का इलाज करना जरूरी है...हाँ मैं इनका खुद से इलाज करूँगी।

मुझे किसी ने कहा कि आप इन घावों को लिखकर कम करो। कहानी लिखो या फिर कुछ और। मैंने लिखना कई साल पहले ही छोड़ दिया था। असल बात तो यह है कि मैं लिखने का हुनर नहीं जानती। इसलिए चिट्ठी लिख रही हूँ। अपने दर्द को शब्दों में बताना आसान नहीं पर चिट्ठी इसे थोड़ा आसान कर सकती है। यह जो गुबार/दर्द/दुःख/अवसाद मन में रहने लगा है, इससे अपने मन का कमरा खाली करवाना चाहती हूँ। लिखना इसमें मदद कर सकता है। मैं लिखना तो जानती हूँ, पर लिखने के लिए पंक्तियाँ नहीं जुटा पाती। शब्द जानती हूँ पर शब्द, पंक्तियों में पिरो नहीं पाती। अब मैं क्या करूँ? इस असमंजस में यही चिट्ठी जीवन के नाम लिखना चाह रही हूँ।

भास्कर बहुत बहुत उदास रहने लगा है। उस हादसे के बाद... नहीं नहीं! मैं उस हादसे को याद नहीं करना चाहती। कहीं भीतर एक दर्द की टीस उभर आती है। तुम्हारे बिना हम दोनों अधूरे से हैं। भास्कर स्कूल गया है। उसके जाने के बाद भी मुझे यह एहसास होता है कि वह अपने अंदर रहने वाली उदासी का एक टुकड़ा घर पर मेरे लिए छोड़ कर जाता है। मैं जब भी उसके कमरे में जाकर चीजें ठीक से रखती हूँ, तब लगता है कि उसके कमरे में रहने वाली उदासी मुझ में धीरे-धीरे समा रही है। कोई महक सी बनी रहती है उसके कमरे में। मुझे घबराहट होती है और मैं वापस अपनी खिड़की वाली जगह पर आकर बैठ जाती हूँ।

...भास्कर! ... मतलब सूरज! सूरज जिसमें रोशनी भरी है। जो उर्जावान है, जो इस जमीन पर सबको जीवित रखे हुए है, जो अपने वक्त का पाबंद है, जो खुश है, जो फूलों-पत्तियों से प्रेम करता है, जो पारदर्शी किरणों का प्रेमी है...फिर मेरे इस कम उम्र के बच्चे के अंदर वह क्यों नहीं रहता? मैं क्या करूँ कि उसके दिमाग में झिलमिल रोशनी का एक दीप बना दूँ? मुझे कुछ तो करना ही होगा। मुझे उसके कमरे की उदासी को बाहर करने के उपाय सोचने होंगे...नहीं! मैं शायद गलत हूँ। कमरे से पहले मुझे भास्कर के दिल-दिमाग से उस उदासी को बाहर का रास्ता दिखाना होगा। हाँ, मैं कुछ करूँगी, जरूर! उसके अंदर बैठी उदासी की वजह तुम ही हो।

तुमको एक बार हम दोनों से बात करनी चाहिए थी। लोग कहते हैं कि लोग मरने के बाद उस नीले आसमान में चले जाते हैं, सितारे बन जाते हैं...लेकिन वास्तव में होता क्या है, ये मुझे नहीं पता। हम दोनों जो तुम्हारे पीछे छूट गए हैं, बस इतना जानते हैं कि तुम अब हम दोनों के बीच नहीं हो। और तुम्हारे न होने का गम हम दोनों के अंदर गहरा घाव बनाता जा रहा है। हम रात को आसमान में सितारे देखते हैं। हम एक दूसरे से बात किये बिना उन सितारों में तुम्हें खोजते हैं। इस उम्मीद में कि शायद तुम हम दोनों को दिख जाओ।

मैं उस दिन को याद कर के काँप जाती हूँ जब मैंने तुम्हारे गले में उस रस्सी को देखा था। एक मामूली सी रस्सी ने तुम्हारी जान ले ली। तुम्हारी मृत्यु की वजह वह रस्सी नहीं थी, बल्कि तुम्हारा दुःख को अपने मन में दबाकर रखना वजह थी। तुमने

* शोधछात्रा, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

उस दुःख को कभी भी साझा नहीं किया। किया भी, तो जितना तुम्हें जरूरी लगा। उस दर्द को तुमने अपने पर हावी होने दिया। तुम्हारे पास हमेशा से हम दोनों थे जिनसे तुम बात करके हल्का महसूस कर सकते थे। तुम वापस जिन्दगी की तरफ मुड़ सकते थे, लेकिन तुमने अकेलापन चुना और तुम्हारे अकेलेपन ने तुम्हारी मृत्यु को चुना।

काश! ...काश, तुमने ऐसा कदम उठाने से पहले एक बार सोचा होता। यह गैर-जिम्मेदाराना हरकत है। जिंदगी इतनी सस्ती तो नहीं कि उसे किसी भी दर्द के ना सह पाने के चलते मौत को भेंट कर दिया जाए। तुम तो जिंदगी बचाया करते थे। मुझे वह कड़कती सर्दी का दिन याद आ रहा है जब एक अल सुबह तुम अस्पताल जाने को तैयार थे। मैंने कहा कि बहुत सर्दी है। आज मत जाओ। तुमने थोड़ा संयम के साथ मुझे जवाब दिया था- ''जिन्दगी हर चीज से ज़्यादा बड़ी है।'' मुझे यकीन नहीं हो रहा कि जो शख्स इस तरह के फलसफे के साथ जीया करता था, अचानक उसे ऐसा क्या हुआ कि उसे अपनी जिन्दगी छोटी लगने लगी? और यह छोटापन कब मौत में तब्दील हुआ मुझे पता भी नहीं चला। उस रोज जब कमरे का दरवाजा खोला, तब जो देखा उसके बाद से मुझे यह लगा कि कोई एक पिस्तौल से निकली गोली मेरे सीने के पार से निकाली गई हो। उस वक्त लगा जमीन पैरों से दरक रही है और में एक गहरी खाई में गिर रही हूँ।

मैं शायद गिर गई थी...लेकिन मैंने अंत में उस खाई से बाहर आने का फैसला किया क्योंकि भास्कर में से एक रोशनी निकल रही थी। मैं उसी रोशनी की रस्सी के सहारे बेसुध ही सही पर उस गहरी खाई से बाहर आई। मुझे कई बार ऐसा भी लगा था कि तुम्हारे जाने के गम को मैं झेल नहीं पाऊँगी। कई बार नितांत अकेलापन कुरेद देता है। खालीपन आकर मुझे घेर लेता है। जिंदगी का लक्ष्य या फिर कोई उत्साह भी नहीं दीखता। बेबस सा महसूस होता है। एक ऊब और उदासी मन में रहती है। कितना अजीब है कि इस स्थिति में भी हम इंसान सामान्य से दिखाई देते हैं...

मेरा बहुत सा वक्त उस खिड़की के पास बैठे हुए गुजरता है। मुझे वहाँ आराम महसूस होता है। आराम नहीं शायद राहत! तुम्हारे जाने के बाद ऐसी न दिखने वाली चोटें लगी थीं, जिनको कोई नहीं देख सकता। कितनी रातें उस महान दर्द में बीत गई और बीत रही हैं। अब जब इस खिड़की के पास आती हूँ तब हवा मेरे अन्दर घुसकर मेरा उपचार करती है मानो। घावों को प्रकृति के पास जाकर ठीक करने का काम शुरू किया जा सकता है। यह खिड़की ही है जो मुझे बाहर की दुनियां में ले जाती है। मैं घर में बैठे-बैठे घूम आती हूँ। थोड़ा आसमान देख आती हूँ और थोड़ा उड़ आती हूँ। क्या मैं ठीक हो रही हूँ? क्या मैं स्वार्थी भी बन रही हूँ जो तुम्हें भुला रही हूँ? नहीं... नहीं...मैं शायद तुम्हारे जाने को स्वीकार कर रही हूँ। धीरे-धीरे तुम्हारे जाने का समय लम्बा होता जा रहा है।

कहीं किताब में एक पंक्ति पढ़ी। ''आपको इस एक जिन्दगी को समझने के लिए इस पूरी दुनिया को निगलना होगा।'' मुझे यह पंक्ति अच्छी लगी। क्या तुमने सारी दुनिया को निगल लिया था या फिर निगलना आया ही नहीं? मुझे नहीं पता। तुमने अपने बचपन को बचपन में नहीं छोड़ा। उसे अपने सीने में पालते रहे। दुःख में डूबे हुए अनुभवों को हम हमेशा साथ लेकर नहीं चल सकते, जो वक्त के साथ हमको मिलते हैं। सच्चाई तो यही है कि हमें लम्हों में चिपक कर नहीं रह जाना चाहिए। अगर चिपकते हैं तब वर्तमान में हम उस बेपरवाही से नहीं उड़ पाते जितने की जरूरत होती है।

दुनिया का दूसरा नाम लोग भी हैं। बचपन में तुम्हारी माँ के इस दुनिया से रुखसत होने के बाद तुम अकेले पड़ गए। तुम्हारा बचपन दुःख में बीता। पिता तुम्हारे होते हुए भी तुम्हारे हो नहीं सके। तुम मन से हमेशा टूटते रहे। एक रिश्ता जो ताना-बना बनाता है वह हमेशा पिता और बेटे के बीच गायब रहा। एक मिनट! नहीं तुम्हारी तरफ से गायब नहीं था। पिता के पास कभी इतना समय नहीं रहा और न वह समझ रही कि वे तुम्हारे साथ समय गुजारते। लेकिन इसके बावजूद मुझे तुम हमेशा बहादुर लगे। तुमने जिन्दगी को कभी छोड़ा नहीं। तुम्हारी दूसरी माँ के आने के बाद हालात और खराब होते चले गए। लेकिन फिर भी तुम्हारे अंदर पिता के दामन में रहने की ललक तुम्हारे अंत समय

तक बनी रही। नई माँ अपने साथ तुम्हारे लिए अतिरिक्त नया और असहनीय भार भी लाई।

गलती तुम्हारी कभी नहीं थी। लेकिन तुमने एक बड़ी तमन्ना को मन में हमेशा पाले रखा। उस उम्मीद की सिंचाई करते रहे कि कभी तो पिता तुम्हारे सिर पर हाथ फेरेंगे। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। उम्मीद का पहाड़ तुमने ऊँचा तैयार कर लिया। लेकिन पिता उस उम्मीद के पास तक नहीं पहुँचे। जब तुम उस पहाड़ से गिरे तब तुमने अवसाद को गले लगा लिया। लेकिन इस सब के बाद भी मैं और भास्कर तुम्हारी जिन्दगी में हमेशा से ही थे। तुम्हें मरे हुए रिश्तों की जगह जीवंत रिश्तों के बारे में सोचना चाहिए था। बचपन से बना अवसाद बड़ी उम्र में तुम अपने परिवार के साथ से मिटा सकते थे। क्या उन रिश्तों से एक कदम पीछे नहीं हटा जा सकता जो सुख और संतुष्टि नहीं देते? तुम तो डॉक्टर थे। जब शरीर में कोई घाव बन जाता है तब उसे सर्जरी करके निकाल दिया जाता है फिर तुम जिन्दगी के घाव वाले रिश्तों को क्यों नहीं निकाल पाए?

मैं फिर भी कहूँगी, क्या तुम्हें मेरे या खुद के परिवार के बारे में नहीं सोचना चाहिए था? क्या हम महज लोग थे जो तुम्हारे साथ रहा करते थे? क्या हममें तुम प्यार नहीं खोज सकते थे? मेरी शिकायतों और सवालों की फेहरिश्त बड़ी बन रही है। मैं तुम्हारी और अपनी आलोचना भी कर रही हूँ। मैं उन्हें जानने में असफल रही। मुझे हमेशा से लगता है कि एक डॉक्टर मौत और जीवन के बीच वह दीवार है जो अपने मरीजों को मौत के जबड़े से खींचकर वापस ले आता है। एक डॉक्टर जितना दर्द बीमार लोगों में देखता है, उसका एहसास लेता है, उसे समझता है, उतना शायद ही कोई और समझ पाए। फिर भी तुमने ऐसा कदम उठाया...

...कभी-कभी यह सब सोचती हूँ तब सिर चकरा जाता है। मैं कमजोर नहीं हूँ पर कमजोरी महसूस करती हूँ। मुझे अपने आपको समेटने में वक़्त लगता है।

सर्दियों का मौसम आ रहा है। सुबह-सुबह गुलाबी सर्दी महसूस होती है। गुलाबी से याद आया जब तुम्हारे भीतर बह जाने की बेचैनी उगने लगी थी तब वह किसी भी रंग को बर्दाश्त नहीं कर पाती थी। धीरे-धीरे तुमने अँधेरे को गले लगाया और उसमें वक़्त बिताने लगे। शुरुआत में मुझे लगा कि काम का दबाव है। इस पेशे में अक्सर ऐसा हो जाता है। लेकिन मुझे यह नहीं लगा था कि तुम अँधेरे में रहते-रहते अपनी जिंदगी को खत्म करने जैसा कदम उठा लोगे। कभी-कभी बैठकर सोचती हूँ तब लगता है कि इतना बड़ा कदम उठाने से पहले तुम ने कुछ सोचा भी या नहीं। मेरे बारे में भी नहीं सोचा? मेरा रहने देते कम से कम बच्चे के बारे में तो सोचते कि इस उम्र में तुम्हारा जाना उसके लिए कितना बड़ा धक्का होगा?

एक सुबह सपने में मुझे तुम्हारा पर्ची पर लिखा 'डेथ' (**Death**) शब्द दिखा। मैं काफी घबरा गई थी। थोड़ी देर बाद जब स्थिर हुई तब याद आया कि किसी मरीज को एक बार तुम दवाओं के नाम लिखकर दे रहे थे। कमरे में मैं, तुम और वह व्यक्ति था। सब सामान्य था। लेकिन मैंने अचानक देखा कि पर्चे पर तुम एक के बाद एक 'डेथ' शब्द लिखे जा रहे थे। मुझे बेहद घबराहट हुई और तुरंत मैंने तुम्हें नाम से पुकारा। तुमने मेरी ओर देखा। लगा कि तुम उस पल कमरे में मौजूद ही नहीं थे। मेरे पुकारने के बाद तुम्हें मानो होश आया और तुरंत उस पर्चे को फाड़कर पास में ही रखे कूड़ेदान में डाल दिया। मरीज भी थोड़ा हैरान था। लेकिन तुमने कहा कि कुछ दिन पहले किसी पेशेंट की मौत की खबर से तुम आहत हो। इसलिए ज़्यादा सोचने के चलते तुम पर्ची पर यह शब्द लिख गए।

उस दिन मुझे लगा कि कहीं कुछ छूट रहा है। तुम्हारे अन्दर कुछ पनप चुका है। मैंने कई बार तुम से इन मसलों पर बात करने की कोशिश की। पर तुम 'सब ठीक है' कहकर टाल गए। ऐसा नहीं है कि मैंने तुम्हें अकेला छोड़ा। बल्कि तुम खुद ही अपने पिता और अपने बीच के रिश्ते के बीच खामोश होते जा रहे थे। मैंने यह भी समझाया कि तुम किसी को प्यार या स्नेह करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। यह जरूरी तो नहीं कि सामने वाला आपको उतना ही प्यार करे जितना आप उनसे बरसों से अपेक्षा करते आ रहे हैं। तुम हमेशा पिता के प्यार को

पाने की उत्कट इच्छा में अपनी जिंदगी बिताते रहे और तुम्हारे पिता उतना ही उनसे भेदभाव करते रहे। एक पिता अपने बच्चे के प्रति इस तरह का बर्ताव कैसे कर सकता है, कभी सोचती हूँ तब चौंक जाती हूँ।

रिश्तों का सोचती हूँ तब इंसान को बेहद स्वार्थी और जटिल पाती हूँ। प्रेम की तो एक ही नस्ल होती है तो फिर क्यों सौतेली माँ को इसमें भेद सा दिखने लगता है? अगर तुम पर सौतेली माँ ने थोड़ा बहुत भी प्रेम लुटाया होता तब तुम ऐसे तो शायद ही करते। मुझे सौतेली शब्द से ऐतराज था। अभी भी है। लेकिन जो तुम्हारे साथ सलूक किया गया उसे लेकर मैं शायद ही उस औरत को कभी माफ कर पाऊं! परंतु मेरी माफी की उसे जरूरत भी क्या है? उसे क्या फर्क पड़ता है? तो! तुम्हारे पिता को शायद मैं माफ न कर पाऊं। हाँ, उन्हें माफी देना मेरे लिए मुश्किल होगा। बचपन से जो व्यवहार उन्होंने तुम्हारे साथ किया वह तुम्हारे अंदर धीरे-धीरे जमता रहा। दुःख की परत ऐसी होती है कि उसे निरन्तर गलाया जाना जरूरी है। लेकिन अगर कोई ऐसा नहीं कर पाता तो परिणाम वही होता है, जो तुमने अपने लिए चुना। प्रेम एक ऐसा सीमेंट होता है जो अगर न मिले तब इंसान अपने अंदर एक खालीपन को पाता है। खालीपन आगे चलकर हमारे दिमाग से जो चाहे करवा सकने की ताकत रखता है। फिर भी मेरा मानना है कि कहीं मन में वह आत्मा रहती है जो मुश्किल पलों में चिंगारी की तरह दिखती है। तो क्या हम इंसान उसे देख नहीं पाते या फिर नजरन्दाज कर देते हैं? क्या तुम्हें वो चिंगारी नहीं दिखी? मैं उस चिंगारी को अपने अंदर पाती हूँ। इस समय चाहे इस खिड़की से बाहर घंटों शून्य में देखती हूँ पर मुझे इसका अंदाजा अच्छी तरह है कि मैं जिंदा हूँ, मुझे जीना है...हाँ, मुझे जीना है।

कुछ दिनों से मुझे अपने घर में रोशनी फैलती हुई दिखती है। किसी ने सही ही कहा है कि दिन बदलते हैं। ये रोशनी सुनहरी सी है। घर के हर कोने में फैलती है और शाम को जाते हुए सभी कोनों में अपने होने के निशान छोड़ भी जाती है। भास्कर अभी गम को अपने अंदर समेटकर रखता है। मैं कोशिश करती हूँ कि घर का माहौल थोड़ा बदल लूँ। जाने वाले अपने निशान हम पर छोड़ कर चले जाते हैं पर सच्चाई यह है कि जो अभी जीवित हैं उन्हें जीना सीखना चाहिए। हम क्यों मरे? मेरे इन शब्दों का मतलब यह नहीं है कि मैं तुम्हें भूल रही हूँ या फिर मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। वास्तव में मैं तुम्हारे अंश को अपने होने में सहेज कर रखना चाह रही हूँ। लोग मरते जरूर हैं पर अपने पीछे वह पूरी जिंदगी हमारे अंदर रखकर जाते हैं।

प्यार आदमी-औरत के भेद को मिटाकर आत्मा से होने वाला राग होता है। जानवरों में भी अपने जन्म दिए गए बच्चे को लेकर लाड़-दुलार होता है। दूर आसमान में दाने की तलाश में गई चिड़िया शाम को अपनी नन्हीं चोंच में अपने बच्चे के लिए दाना ले आती है। यह प्रेम ही तो है। समंदर जिस जमीन पर अपना साम्राज्य का बिछौना बिछाता है वह उस जमीन से प्रेम से ही बंधा है। उसका तल कितना शांत होता है। लगता है जैसे अपनी प्रेमिका के साथ वक्त बिता रहा हो। आसमान बादलों में अपने प्रेम को देखता है। हम इंसान भी ऐसे ही हैं। कुदरत ने हमें ऐसा बनाया है। बिना एहसासों के हम खोखले हैं। फिर तुम्हारे पिता ऐसे कैसे तुम्हें प्रेम नहीं कर पाए?

खुद मजबूत बनूँगी तभी भास्कर की बेहतर दोस्त बन पाऊँगी। उसे जिंदगी के मायने समझना होगा। उसे यह जानना होगा कि उदासी से हमारे जीवन के पल कम हो रहे हैं। हमें आगे बढ़ना होगा। हमें हवा को महसूस करना होगा। हमें बारिश, जो एक जादू है उसे हैरानी से देखना होगा। आसमान में बादलों के खेलों को पास से निहारना होगा। इन पेड़ों से सीखना होगा कि अपनी जड़ों के सहारे मजबूती से कैसे खड़े होना है...हमें बहुत कुछ सीखना है...जिन्दगी रुक नहीं सकती। हम रुक नहीं सकते। यह गतिशीलता कुदरत की देन है। अगर हम रुकते हैं तब हम कुदरत की खिलाफत करते हैं। तुम्हारे प्रेम को मन में बसाकर हमें अपने सफर पर निकलना ही होगा, हर हाल में!

*****